अध्याय

11

राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व

संसार में प्रत्येक कालखंड में ऐसे व्यक्तियों ने जन्म लिया है, जिन्होंने अपने कार्यों से समाज को एक नई राह दिखाई है। पीछे के पृष्ठों में हम ऐसे बहुत से व्यक्तियों के बारे में पढ़ चुके हैं, यहां पर हम कुछ और व्यक्तित्वों के बारे में अध्ययन करेंगे–

निहालचंद

किशनगढ़ चित्रकला शैली को चरमोत्कर्ष पर पहुँचाने का श्रेय निहालचंद को ही है। यह किशनगढ़ के शासक सावंतसिंह के दरबार में था। इसने सावंतसिंह एवं उसकी प्रेयसी बनी–ठनी को राधाकृष्ण के रूप में चित्रित किया। बनी–ठनी का चित्र भारतीय 'मोनालिसा' कहा जाता है।

पन्नाधाय

पन्ना मेवाड़ के महाराणा उदयसिंह की धाय माँ थी। मेवाड़ के एक सामन्त बनवीर ने 1535 ई. में महाराणा विक्रमादित्य की हत्या कर युवराज उदयसिंह की हत्या का भी प्रयास किया। पन्नाधाय ने अपने पुत्र चंदन को उदयसिंह की जगह लिटाकर बनवीर की तलवार का शिकार होने दिया और उदयसिंह को किले से बाहर भेजकर उसकी प्राण रक्षा की। मेवाड़ के इतिहास में पन्नाधाय का त्याग एक अविस्मरणीय घटना है।

गवरी बाई

डूंगरपुर के नागर ब्राह्मण परिवार में जन्मी कृष्ण भक्त कवयित्री गवरी बाई को 'वागड़ की मीरा' भी कहा जाता है। डूंगरपुर महारावल शिवसिंह ने गवरीबाई के लिए 1829 में बालमुकुन्द मंदिर का निर्माण करवाया।

दुर्गादास राठौड़

स्वामीभक्त वीर शिरोमणि दुर्गादास महाराजा जसवंत सिंह के मंत्री आसकरण के पुत्र थे। इनका जन्म 13 अगस्त, 1638 को मारवाड़ के सालवा गाँव में हुआ। ये जसवंतसिंह की सेना में रहे। महाराजा की मृत्यु के बाद उनकी रानियों तथा खालसा हुए जोधपुर के उत्तराधिकारी अजीतसिंह की रक्षा के लिए मुगल सम्राट औरंगजेब से उसकी मृत्यु–पर्यन्त (1707 ई.) राठौड़–सिसोदिया संघ का निर्माण कर संघर्ष किया। शहजादा अकबर को औरंगजेब के विरुद्ध सहायता दी तथा उसके पुत्र–पुत्री (बुलन्द अख्तर व सफीयतुनिस्सा) को इस्लोमोचित शिक्षा देकर मित्र धर्म निभाया एवं सहिष्णुता का परिचय दिया। अंत में महाराजा अजीतसिंह से अनबन होने पर सकुटुम्ब मेवाड़ चले आये और अपने स्वावलम्बी होने का परिचय दिया। दुर्गादास की मृत्यु उज्जैन में 22 नवम्बर, 1718 में हुई। उनकी वीरता एवं साहस के गुणगान में मारवाड़ में यह उक्ति प्रचलित है 'मायड़ ऐसा पूत जण जैसा दुर्गादास'।

दुर्गादास राठौड़

दुरसा आढ़ा

अकबर के समकालीन दुरसा आढ़ा ने महाराणा प्रताप एवं राव चन्द्रसेन के देश–प्रेम की भावना का यशोगान किया है। विरुद्ध छहत्तरी (सर्वाधिक प्रसिद्ध), किरतार बावनी, वीरम देव सोलंकी रा दूहा आदि इनकी रचनाएँ हैं।

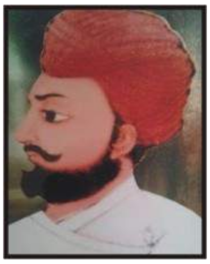

दुरसा आढ़ा

दयालदास

बीकानेर रै राठौडां री ख्यात के रचनाकार दयालदास का जन्म 1798 ई. में बीकानेर के कुड़ीया नामक गाँव में हुआ। दयालदास री ख्यात की हस्तलिखित प्रति में राठौड़ों की उत्पत्ति से लेकर महाराजा सरदारसिंह के राज्यारोहण (1851 ई.) तक का इतिहास लिखा गया है। यह ख्यात बीकानेर राजवंश का विस्तृत विवरण जानने, मुगल–मराठों के राठौड़ों से सम्बन्ध जानने, फरमान, निशान आदि के राजस्थानी में अनुवाद तथा बीकानेर की प्रशासनिक व्यवस्था को समझने के लिए महत्त्वपूर्ण है।

कविराज श्यामलदास

मेवाड़ के महाराणा शम्भूसिंह एवं उनके पुत्र महाराणा सज्जन सिंह के दरबारी कवि कविराज श्यामलदास का जन्म 1836 ई. में धोंकलिया (भीलवाड़ा) में हुआ। मेवाड़ महाराणा शम्भूसिंह के आदेश पर इन्होंने मेवाड़ राज्य का इतिहास लिखना शुरू किया, जो वीर विनोद नामक ग्रन्थ में संकलित है। ब्रिटिश–भारत सरकार ने इनको केसर–ए–हिंद की उपाधि से तथा महाराणा मेवाड़ ने इनको कविराजा की उपाधि से विभूषित किया।

कविराज श्यामलदास

गौरीशंकर हीराचन्द ओझा

राजस्थान के इतिहासकार एवं पुरातत्ववेत्ता गौरीशंकर हीराचन्द ओझा का जन्म 1863 ई. में रोहिड़ा (सिरोही) में हुआ था। प्राचीन लिपि का अच्छा ज्ञान होने के कारण इन्होंने भारतीय प्राचीन लिपिमाला नामक ग्रंथ की रचना की। अंग्रेजों ने इन्हें महामहोपाध्याय एवं रायबहादुर की उपाधि प्रदान की।

गौरीशंकर हीराचन्द ओझा

बीरबल सिंह

गंगानगर जिले के रायसिंहनगर में जन्मे बीरबल सिंह बीकानेर प्रजा–परिषद् के सदस्य थे। वे सामंती अत्याचारों का विरोध करने एवं नागरिक अधिकारों की प्राप्ति के हर आन्दोलन में अगवा रहते थे। प्रजा परिषद् ने 30 जून, 1946 को रायसिंह नगर में एक कार्यकर्ता सम्मेलन कर भावी रणनीति पर विचार किया। 1 जुलाई, 1946 के दिन झण्डा अभिवादन के तहत् कार्यकर्ता हाथों में तिरंगे झण्डे लिए सम्मेलन स्थल पर पहुँचे। इसी बीच रेलवे स्टेशन पर कार्यकर्ताओं की गिरफ्तारी और उन पर जुल्म की सूचना पाकर बीरबल सिंह के नेतृत्व में कार्यकर्ता हाथ में तिरंगा लिए स्टेशन की ओर बढ़ने लगे, जिससे घबरा कर सरकारी अधिकारी ने गोली चलवा दी। इन्हीं में से एक गोली का शिकार बीरबल सिंह बना, लेकिन उसने तिरंगे को गिरने नहीं दिया। घायलावस्था में भी बीरबल सिंह के बोल फूट रहे थे 'झण्डा ऊँचा रहे

हमारा—झण्डा ऊँचा रहे हमारा।'

विजयदान देथा

विजयदान देथा

1 सितम्बर, 1926 को बोरूंदा (जोधपुर) में जन्मे विजयदान देथा की प्रसिद्ध कृतियाँ बातां री फुलवारी (लोक कथा, 1960), बापू के तीन हत्यारे (आलोचना, 1948), चौधरायन की चतुराई (लघु कहानी संग्रह, 1996), दुविधा और अलेखू हिटलर आदि हैं। ये रूपायन संस्थान बोरूंदा के सह—संस्थापक भी हैं। 'बिज्जी' उपनाम से प्रसिद्ध देथा को 1974 ई. में केन्द्रीय साहित्य अकादमी पुरस्कार, 1992 ई. में भारतीय भाषा परिषद् पुरस्कार, 2002 ई. में बिहारी पुरस्कार, 2006 ई. में साहित्य चूड़ामणि पुरस्कार, 2007 ई. में पद्मश्री एवं 2012 ई. में राजस्थान रत्न से सम्मानित किया गया। उनकी एक लोककथा पर मणि कौल ने पहले दुविधा फिल्म बनाई, फिर इसी कथा पर अमोल पालेकर ने पहेली नामक फिल्म बनाई।

कन्हैयालाल सेठिया

कन्हैयालाल सेठिया

लोकप्रिय गीत 'धरती धोरां री' और अमर लोकप्रिय गीत 'पाथल और पीथल' के यशस्वी रचयिता साहित्यकार कन्हैयालाल सेठिया का जन्म 11 सितम्बर, 1919 को राजस्थान के सुजानगढ़ (चुरू) में हुआ।

अल्लाह जिलाई बाई

अल्लाह जिलाई बाई

'केसरिया बालम आओ नी पधारो म्हारै देस........' गीत प्रख्यात मांड गायिका अल्लाह जिलाई बाई के कंठों से निकलकर अमर हो गया। इनका जन्म 1 फरवरी, 1902 को बीकानेर में हुआ। मांड गायिकी में विशिष्ट योगदान के लिए सन् 1982 में इन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया गया। बाईजी को सन् 1983 में रॉयल अल्बर्ट हॉल में बी.बी.सी. लंदन द्वारा कोर्ट सिंगर का अवार्ड दिया गया।

गवरी देवी

मांड गायन शैली को देश—विदेश में ख्याति दिलाने वाली लोक गायिका गवरी देवी का जन्म 1920 ई. में जोधपुर में हुआ। संगीत इन्हें विरासत में मिला। इनके माता—पिता दोनों बीकानेर दरबार की संगीत प्रतिभाएँ थी। मास्को में आयोजित 'भारत महोत्सव' में गवरी देवी ने मांड गायकी से श्रोताओं को सम्मोहित कर प्रदेश का नाम रोशन किया।

कम्पनी हवलदार मेजर पीरू सिंह

पीरू सिंह

20 मई, 1918 में रामपुरा बेरी (झुंझुनूं) में जन्मे मेजर पीरू सिंह 1936 ई. में 6 बटालियन राजपूताना राइफल्स में भर्ती हुए। 18 जुलाई, 1948 को 6 राजपूताना राइफल्स के सी.एच.एम.पीरू सिंह को जम्मू कश्मीर के तिथवाल में शत्रुओं द्वारा अधिकृत एक पहाड़ी पर आक्रमण कर उस पर कब्जा करने का काम सौंपा गया। अपनी अंतिम सांस लेने से पहले उन्होंने दुश्मन के

ठिकानों को नष्ट कर दिया। इन्हें मरणोपरान्त परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया। परमवीर चक्र से सम्मानित होने वाले ये पहले राजस्थानी थे।

मेजर शैतानसिंह

'बाणासुर के शहीद' के नाम से प्रख्यात मेजर शैतानसिंह का जन्म 1 सितम्बर, 1924 को जोधपुर जिले की फलौदी तहसील के बाणासुर गाँव में हुआ। शैतानसिंह भारतीय सेना में भर्ती हो गए।

17 नवम्बर, 1962 को जब चीन ने लद्दाख क्षेत्र की चुशूल चौकी पर आक्रमण किया, उस समय इस चौकी की रक्षा की जिम्मेदारी मेजर शैतानसिंह की 'चारली कम्पनी' पर थी। अपने 120 साथियों के साथ उन्होंने चीनी सेना को दो बार पीछे हटने पर मजबूर कर दिया। जब उनके पास केवल दो सैनिक शेष रह गए और वे स्वयं भी बुरी तरह घायल हो गए तो उन्होंने दोनों सैनिकों को पीछे चौकी पर सूचना देने के लिए भेज दिया और स्वयं अकेले ही गोलीबारी करते रहे। अड़तीस वर्ष की आयु में 18 नवम्बर, 1962 को मातृभूमि के इस लाडले ने शत्रु से लड़ते हुए अपने प्राणों की कुर्बानी दे दी। मेजर शैतानसिंह को मरणोपरान्त परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया।

मेजर शैतानसिंह

स्वामी केशवानन्द

शिक्षा संत के रूप में प्रसिद्ध स्वामी केशवानन्द का जन्म सीकर जिले के मंगलूणा गाँव में 1883 ई. में चौधरी ठाकरसी के घर हुआ। इनके बचपन का नाम 'बीरमा' था। गाँधीजी से प्रभावित होकर इन्होंने 1921 ई. से 1931 ई. तक स्वाधीनता आन्दोलन में भाग लिया और जेल यात्रा की। केशवानन्द ने 1932 ई. में संगरिया में जाट विद्यालय का संचालन सम्भाला और उसे मिडिल स्तर से महाविद्यालय स्तर तक पहुँचाया, जिसमें कला, कृषि, विज्ञान महाविद्यालय के अतिरिक्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, संग्रहालय एवं ग्रामोत्थान विद्यापीठ बनाया। इन्होंने 1944 से 1956 ई. तक बीकानेर के रेगिस्तानी गाँवों में लगभग 300 पाठशालाएँ खुलवाई तथा अनेक स्थानों पर चलते–फिरते वाचनालय एवं पुस्तकालय स्थापित किये।

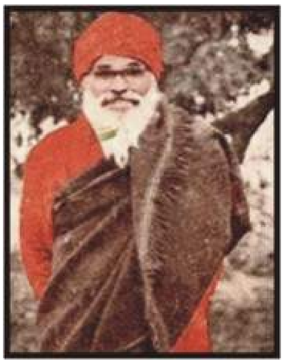

स्वामी केशवानन्द

पं. झाबरमल शर्मा

'पत्रकारिता के भीष्मपितामह' पं. झाबरमल शर्मा का जन्म जसरापुर में 1880 ई. में हुआ। 1905 ई. में पं. दुर्गाप्रसाद मिश्र ने झाबरमल को हिन्दी पत्रकारिता और सम्पादन की शिक्षा दी। इन्होंने अनेक पुस्तकों का सम्पादन किया, जिनमें – सीकर का इतिहास, खेतड़ी का इतिहास, खेतड़ी नरेश और विवेकानन्द, आदर्श नरेश, श्री अरविन्द चरित, हिन्दी गीता रहस्य सार, आत्म विज्ञान शिक्षा, तिलक गाथा, भारतीय गोधन आदि प्रमुख हैं।

आचार्य तुलसी

'अणुव्रत आन्दोलन' के सूत्रधार आचार्य तुलसी का जन्म 20 अक्टूबर, 1914 को नागौर जिले के लाडनूं कस्बे में हुआ। बाईस वर्ष की आयु में वे तेरापंथ संघ के नवें आचार्य बनाए गए। नैतिकता के उत्थान के लिए उन्होंने 1949 ई. में अणुव्रत आन्दोलन का सूत्रपात किया और इससे जनमानस को जोड़ने हेतु एक लाख किलोमीटर की पदयात्राएँ की। आचार्य तुलसी का संदेश है – ''इन्सान पहले इन्सान, फिर हिन्दू या मुसलमान''।

आचार्य तुलसी

कोमल कोठारी

कोमल कोठारी

कोमल कोठारी का जन्म 4 मार्च, 1929 को चित्तौड़गढ़ जिले के कपासन कस्बे में हुआ। इन्होंने लोक संस्कृति के उन्नयन में अपना संपूर्ण जीवन लगा दिया। इन्होंने 1960 ई. में जोधपुर जिले के बोरून्दा कस्बे में 'रूपायन' नामक संस्थान की स्थापना की।

कृपालसिंह शेखावत

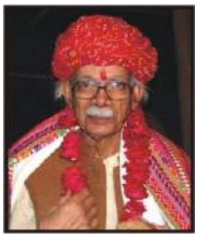

कृपालसिंह शेखावत

'शिल्पगुरु' कृपालसिंह शेखावत का जन्म सीकर जिले के मऊ ग्राम में 1922 ई. में हुआ। इन्होंने ब्लू पॉटरी पर चित्रांकनों के माध्यम से अन्तर्राष्ट्रीय पहचान बनाई। 1974 ई. में इन्हें 'पद्मश्री' से भी सम्मानित किया गया।

जगजीत सिंह

जगजीत सिंह

8 फरवरी, 1941 को श्रीगंगानगर कस्बे के एक सिक्ख परिवार में जन्मे गजल गायक जगजीत सिंह का 10 अक्टूबर 2011 को निधन हो गया। इन्हें मरणोपरान्त राजस्थान सरकार ने 31 मार्च, 2012 को 'राजस्थान रत्न' पुरस्कार से नवाजने की घोषणा की।

पं. विश्वमोहन भट्ट

पं. विश्वमोहन भट्ट

12 जुलाई, 1950 को जयपुर में पं. विश्वमोहन भट्ट का जन्म हुआ। 1965 ई. से इन्होंने देश–विदेश में संगीत प्रस्तुतियाँ देनी शुरू की। 1994 ई. में इन्हें विख्यात ग्रेमी पुरस्कार मिला। भट्ट ने गिटार में सितार, सरोद और वीणा के 14 अतिरिक्त तारों के सटीक और अद्भुत मुहावरों का समन्वय करके मोहनवीणा का आविष्कार किया।

कर्पूरचन्द कुलिश

कर्पूरचन्द कुलिश

20 मार्च, 1926 को टोंक जिले के सोडा गाँव में कर्पूरचन्द कुलिश का जन्म हुआ। 1951 में कुलिश ने पत्रकार जीवन की शुरुआत की और 7 मार्च, 1956 को सांध्यकालीन दैनिक के रूप में राजस्थान पत्रिका की शुरुआत की। आपातकाल (1975 ई.) के समय इन्होंने राजस्थान के गाँवों की यात्रा की और ग्रामीण जनजीवन व सामाजिक व्यवस्था पर 'मैं देखता चला गया' शृंखला लिखी जो राजस्थान के ग्रामीण परिवेश का प्रामाणिक दस्तावेज मानी जाती है। कुलिश ने पोलमपोल नाम से ढूंढाड़ी में नियमित कॉलम लिखा जो उनकी साहित्यिक वसीयत मानी जाती है।

डॉ. पी. के. सेठी

जयपुर फुट के जनक डॉ पी. के. सेठी ने सवाई मानसिंह चिकित्सालय में कार्यरत रामचन्द्र के सहयोग से 1969 ई. में दिव्यांगों के लिए नकली पैर (जयपुर फुट) विकसित किया। इस कार्य के लिए इन्हें रैमन मैग्सेसे अवार्ड, डॉ. वी. सी. राय सम्मान, पद्मश्री सम्मान तथा रोटरी इंटरनेशनल अवार्ड फॉर वर्ल्ड अण्डर स्टेण्डिग एण्ड पीस पुरस्कार प्राप्त हुए।

डॉ. पी. के. सेठी

अभ्यास प्रश्न

बहुचयनात्मक प्रश्न –

1. स्वामी केशवानन्द का जन्म किस जिले में हुआ?
   (अ) सीकर (ब) चूरू
   (स) नागौर (द) जयपुर
2. जयपुर फुट के जनक कौन थे?
   (अ) डॉ. पी.के. सेठी (ब) डॉ. पी.के. अग्रवाल
   (स) डॉ. अशोक (द) डॉ. वी.सी. राय
3. ''इंसान पहले इंसान, फिर हिंदू या मुसलमान'' यह संदेश किसका है?
   (अ) आचार्य तुलसी (ब) कविराज श्यामलदास
   (स) कोमल कोठारी (द) कन्हैयालाल सेठिया
4. 'वागड़ की मीरा' किसे कहा जाता है?
   (अ) गवरी बाई (ब) पन्ना धाय
   (स) राना बाई (द) कर्मावती
5. परमवीर चक्र से सम्मानित होने वाले प्रथम राजस्थानी हैं–
   (अ) पीरू सिंह (ब) शैतान सिंह
   (स) वीरेन्द्र सिंह (द) वेद प्रकाश

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. दुर्गादास राठौड़ का जन्म कब व कहाँ हुआ था?
2. मेजर शैतान सिंह भारतीय सेना की किस कम्पनी का नेतृत्व कर रहे थे?
3. कर्पूरचंद कुलिश किस समाचार–पत्र के संस्थापक थे?
4. 'ब्लू पॉटरी' पर चित्रांकन के लिए प्रसिद्ध शिल्पकार कौन थे?
5. पत्रकारिता का 'भीष्म पितामह' किसे कहा गया है?
6. प्राचीन लिपिमाला ग्रंथ के रचनाकार कौन हैं?
7. 'बिज्जी' किस साहित्यकार का उपनाम है?
8. कविराज श्यामलदास की महत्त्वपूर्ण रचना का नाम लिखिये।
9. 'धरती धोरां री' गीत के रचयिता कौन थे?

10. सुमेलित कीजिये

व्यक्ति	क्षेत्र
1. पं. झाबरमल शर्मा	पत्रकारिता
2. शैतान सिंह	गायन
3. जगजीत सिंह	भक्ति
4. गवरी बाई	वीरता

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. स्वामी केशवानन्द के शिक्षा के क्षेत्र में योगदान का वर्णन कीजिये।
2. दुर्गादास राठौड़ इतिहास में अपना विशिष्ट स्थान क्यों रखते हैं?
3. स्वतंत्रता आंदोलन में शहीद बीरबल सिंह के योगदान का वर्णन कीजिये।
4. पं. झाबरमल शर्मा द्वारा पत्रकारिता के क्षेत्र में किये गये कार्यों का उल्लेख कीजिये।
5. विजयदान देथा एक असाधारण साहित्यकार थे, इस कथन पर टिप्पणी लिखिये।

परियोजनात्मक कार्य :

1. अपने जिले के हर क्षेत्र के 10 महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के जीवन से जुड़ी जानकारियों को इकट्ठा करें।

संदर्भ ग्रंथ सूची

	पुस्तक	लेखक
1.	आधुनिक राजस्थान का वृहत् इतिहास खण्ड–1	डॉ. रामप्रसाद व्यास
2.	राजस्थान का इतिहास	डॉ. गोपीनाथ शर्मा
3.	राजस्थान का इतिहास	राजेन्द्र वर्मा, रीता रावत
4.	राजस्थान का इतिहास, कला, संस्कृति साहित्य परम्परा एवं विरासत	डॉ. हुकुमचंद जैन व डॉ. नारायण लाल माली
5.	राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास	डॉ. गोपीनाथ शर्मा
6.	राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा	डॉ. जयसिंह नीरज, डॉ. बी.एल. शर्मा
7.	राजस्थान के प्रमुख दुर्ग	डॉ. राघवेन्द्र सिंह मनोहर
8.	राजस्थान में भक्ति आंदोलन	डॉ. पेमाराम
9.	भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला	डॉ. रीता प्रताप
10.	राजस्थान की सांझी कला	डॉ. कहानी भानावत
11.	भारतीय मूर्तिशिल्प एवं स्थापत्य कला	मीनाक्षी कासलीवाल भारती
12.	राजस्थानी लोक जीवन शब्दावली	ब्रजमोहन जावलिया
13.	राजस्थानी भाषा और साहित्य	डॉ. मोतीलाल मेनारिया
14.	सांस्कृतिक राजस्थान	डॉ. पेमाराम
15.	www.nationalwarmemorial.gov.in	
16,	www.tourism.rajasthan.gov.in	